Chapter- 8

# खोटा सिक्का

**STUDY NOTES**

## MIND MAP

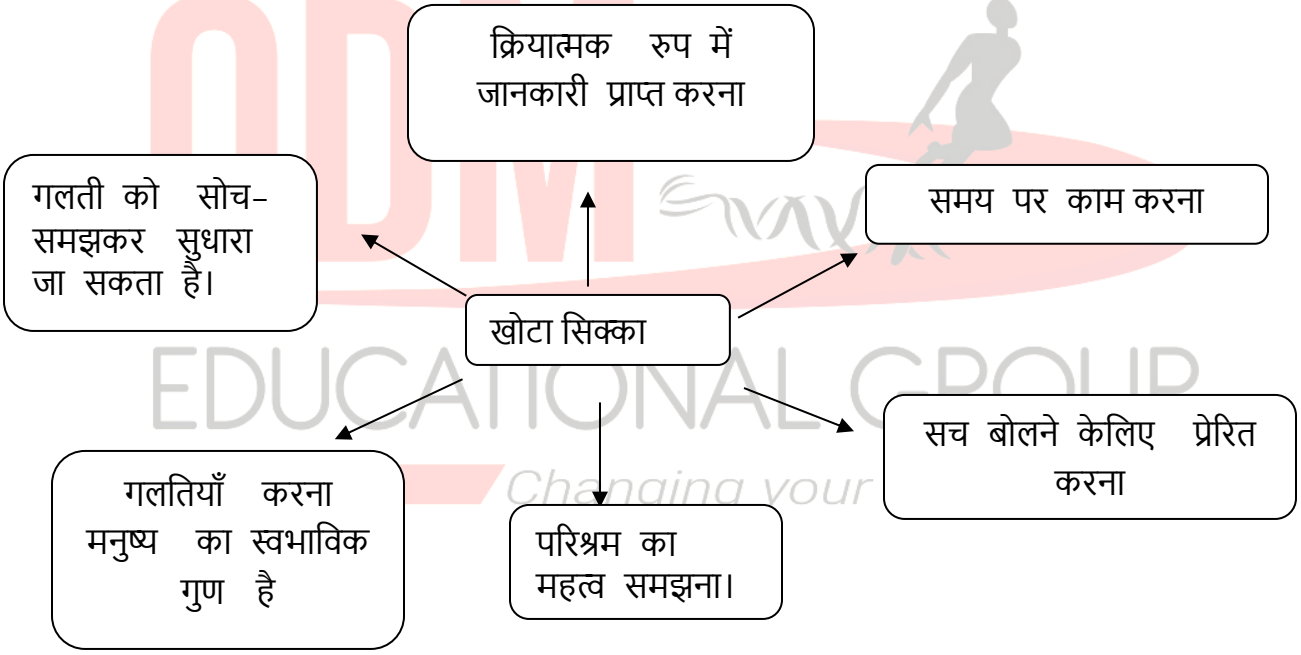

## पाठ प्रवेश

खोटा सिक्का कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह बताया है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपना कार्य परिश्रम, सच्ची लगन एवं ईमानदारी से करें। किसी को हम कुछ समय के लिए तो धोखा दे सकते हैं परंतु इससे हमें सच्ची सफलता प्राप्त नहीं हो सकती वास्तव में हम नैतिक रूप से दूसरों की नज़रों से गिर जाते हैं।

## सारांश

इस प्रेरणाप्रद कहानी में कहानीकार ने सच्चाई, परिश्रम एवं खरेपन को व्यावहारिक स्तर पर व्यक्त किया है। सुरेश परीक्षा में फेल हो गया लेकिन उसने अपने घरवालों को सही परीक्षा परिणाम नहीं बताया बल्कि नकली रिपोर्ट-बुक बनाकर अपने पिता जी को दिखा दी। इस रिपोर्ट-बुक के अनुसार उसे सभी विषयों में बहुत अच्छे अंक मिले थे। चूँकि वह मासिक, त्रैमासिक तथा छमाही परीक्षाओं में लगातार फेल हुआ था, इसलिए उसके पिता जी ने सोचा कि एकाएक इसमें इतनी योग्यता कहाँ से आ गई। बाद में जब रिपोर्ट-बुक घर आई तो पता चला कि सुरेश सभी विषयों में फेल है। उसके पिता जी कुछ बोले नहीं उसे समझाने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करते रहे।

एक दिन यात्रा करते समय बस के कंडक्टर ने उन्हें एक खोटी अठन्नी थमा दी। घर वापस आने पर उन्होंने सुरेश को वही अठन्नी देकर सब्ज़ी लाने के लिए कहा। सभी दुकानदारों ने यह कहा कि अठन्नी खोटी है, इसका कुछ नहीं मिलेगा तो वह निराश होकर घर वापस लौट आया। उसने सारी बात अपने पिता जी को बताई। सुरेश की बात सुनकर उसके पिता जी ने कहा, "जब खोटी अठन्नी बाज़ार में नहीं चल सकती तो खोटा आदमी संसार में कैसे चल सकेगा? अब सुरेश की समझ में सारी बातें आ गई।